# IInd World war

## Discuss the Causes of Second world war?
## द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों का विश्लेषण कीजिए?

Ans:→ लगभग बीस साल की शांति के बाद 1 सितम्बर 1939 के दिन युद्ध की अग्नि ने फिर सारे यूरोप को अपनी लपटों में समेट लिया और कुछ ही दिनों में यह संघर्ष विश्वव्यापी हो गया। विगत दो दशाब्दियों के इतिहास के अध्ययन के बाद यह प्रश्न पूछना स्वाभाविक है कि शांति स्थापित रखने के अथक प्रयास के बाद भी द्वितीय विश्व-युद्ध क्यों छिड़ गया? क्या संसार के लोग और विविध देशों के शासक यह चाहते थे? नहीं; बात बिलकुल ऐसी नहीं थी। समूचे संसार में शायद कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा नहीं था जो युद्ध का कामना करता हो। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष और सभी वर्ग की जनता शांति चाहती थी। इसी तरह यूरोप की कोई भी सरकार युद्ध नहीं चाहती थी। यहाँ तक कि जर्मन सरकार भी युद्ध से बचना चाहती थी। स्वयं हिटलर भी युद्ध नहीं चाहता था। अंतिम समय तक हिटलर का यही विचार था कि संकट पैदा करके, धौंस दिखाकर, डरा धमकाकर, पोलैण्ड से डान्जिग छीन लिया जाय। वह जानता था कि युद्ध से उसका सर्वस्व नाश हो जाएगा। बिना युद्ध किये ही विजय हासिल कर लेना उसकी चाल थी। वास्तव में "युद्ध के बिना विजय" के सिद्धान्त पर ही उसकी सारी मान-मर्यादा निर्भर थी, पर ऐसा नहीं हो सका। किसी के इच्छा नहीं होने पर भी युद्ध छिड़ गया। ऐसा क्यों हुआ और इसके लिए कौन-कौन से कारण जिम्मेवार थे। वे निम्नलिखित प्रमुख थे:→

(1) वर्साय-व्यवस्था की त्रुटियाँ:→ 1919 के पेरिस शांति-सम्मेलन में शांति का महल नहीं खड़ा किया जा सकता था। उस समय यह आम विश्वास था कि वार्साय-सन्धि के द्वारा एक ऐसे ही विष-वृक्ष के बीज का आरोपण किया गया है जो कुछ ही समय में एक विशाल संहारक वृक्ष के रूप में खड़ा हो जाएगा, और उसका कड़ फल सबों को बुरी तरह चखना पड़ेगा। यह कहा जाता था कि विलसन के आदर्शवादी

सिद्धान्त के आधार पर वर्साय-व्यवस्था की स्थापना हुई थी, लेकिन यह बात सर्वथा गलत है। वास्तविकता यह है कि विलसन के आदर्शों को किसी भी स्थान पर नहीं अपनाया गया था। पराजित राज्यों के सम्मुख "आरोपित संधियों" को स्वीकार करने के सिवा कोई चारा नहीं था। उनके लिए यह बुद्धिमानी थी कि वे आँख मींचकर कठोर संधि के कड़ुए घूट को चुपचाप कण्ठ के नीचे उतार ले। लेकिन यह स्थिति अधिक दिनों तक टिकने वाली नहीं थी। यह निश्चित था कि कभी न कभी वह समय अवश्य आएगा जब जर्मनी एक शक्तिशाली राज्य बनेगा और वर्साय के घोर अपमान का बदला अपने शत्रुओं से अवश्य लेगा। विजय के मद में चूर मित्रराष्ट्रों ने इस बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया कि जर्मनी के साथ इस प्रकार का दुर्व्यवहार करके भविष्य के लिए कितने खतरनाक कांटे बो रहे हैं।

वर्साय-व्यवस्था की दूसरी कमजोरी भी थी। इसके द्वारा यूरोप में अनेक "खतरे के केन्द्रों" का निर्माण हुआ था। कहा जाता है कि इस व्यवस्था के कारण यूरोप का "बाल्कनीकरण" हो गया था। झूठी राष्ट्रीयता के नाम पर यूरोप को टुकड़ा-टुकड़ा कर दिया गया था और पुराने साम्राज्यों के स्थान पर असंख्य छोटे-छोटे राज्य पैदा हो गये थे। प्रायः ये सभी राज्य भविष्य के खतरे के तुफानी केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त वर्साय-व्यवस्था के द्वारा सुडेटेन लैंड, डांजिंग, पोलिश-गलियारे जैसे खतरनाक "एल्सस-लोरेन" पैदा हो गये थे। यह निश्चित था कि उपयुक्त समय आने पर इन खतरनाक केन्द्रों में संकट उपस्थित होंगे और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर उसका बुरा असर पड़ेगा। लेकिन 1919 के सन्धिकर्ता अदूरदर्शी राजकर्ता शायद इसकी कल्पना नहीं कर सके। हिटलर के उत्कर्ष में इस बात से बड़ी मदद मिली थी। अतएव यदि वर्साय-व्यवस्था को युद्ध का कारण माना जाय तो कुछ गलत न होगा।

(2) वचन विमुखता → हॉब्स ने लिखा है कि जब मनुष्य अपने दिये हुए वचनों का पालन नहीं करते

संधियों के शर्तों को पूरा करने में हिचकिचाते हों, तो वैसी स्थिति में हम युद्ध की स्थिति और "प्राकृतिक अवस्था" में रहते हैं। अपने द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं पर नहीं टिकना सबसे बड़ा अपराध है। ऐसा करके मनुष्य केवल अपने ही प्रति नहीं बल्कि उस व्यक्ति के प्रति भी अन्याय करता है, जिसके साथ वह कुछ प्रतिज्ञा किये रहता है। राष्ट्रसंघ के विधान पर हस्ताक्षर कर के सभी ~~सदस्य~~ सदस्य, राज्यों से वादा किया था कि वे सामूहिक रूप से सब के प्रादेशिक अखण्डता और राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे। लेकिन जब मौका आया तब सब-के-सब पीछे हट गये। जापान चीन पर बलात्कार करता रहा, इटली अबीसीनिया को रौंदता रहा। दोनों आक्रान्त देश राष्ट्रसंघ के थे; पर किसी ने कुछ नहीं किया। इसके बाद चेकोस्लोवाकिया की बारी आई। फ्राँस चेकोस्लोवाकिया के रक्षा करने में वचनबद्ध था। लेकिन, जब समय आया तो वह अपने मित्र को बचाने तो नहीं ही गया, उल्टे उसके विनाश में सहायक ही सिद्ध हुआ। म्युनिख समझौते के बाद ब्रिटेन और फ्राँस परिवर्तित चेक सीमा को गारंटी किये हुए थे, पर जब हिटलर बचे हुए चेक-राज्य को भी हड़पने लगा तो किसी ने उसका विरोध नहीं किया। इससे बढ़कर विश्वासघात और क्या हो सकता था? इस नीति का परिणाम यह हुआ कि छोटे-२ राज्यों में विश्वास जो अपनी सुरक्षा के लिए बड़े राष्ट्रों पर निर्भर थे, बड़े राष्ट्रों पर से उठने लगा। इससे भी बढ़कर इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि धोखेबाजी की नीति से आक्रमण प्रवृतियों को काफी प्रोत्साहन मिला। जापान ने चीन पर आक्रमण किया और उसे भी कोई दण्ड नहीं मिला। मुसोलनी को इससे प्रोत्साहन मिला और उसने अबीसीनिया पर चढ़ाई कर दी। अबीसीनिया पर आक्रमण करने वाले को भी कोई दण्ड नहीं मिला। इसलिए हिटलर ने आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया को हड़प लिया। आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया पर

आक्रमण कभी कोई विरोध नहीं हुआ। इस कमजोरी से फिर लाभ उठाकर हिटलर ने पोलैंड पर चढ़ाई कर दी। अगर सभी राष्ट्र अपने दिये गये वचनों का पालन करते रहते और आक्रमण के अवसर पर संधि के अनुसार अपने साथियों की मदद करते रहते तो, आक्रमण प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन नहीं मिलता और दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ने से बच जाता।

(3) **गुट-बन्दी** → आधुनिक युग में दुनिया के ~~मन में~~ अधिकतर लोगों के मन में यह एक विश्वास जम गया है कि सैन्य-संधि, गुटबन्दी, से विश्व-शांति कायम रखी जा सकती है। शांति बनाये रखने के नाम पर यूरोपीय राज्यों के बीच विविध सैन्य संधियाँ हुईं। जिसके फलस्वरूप यूरोप फिर से दो परस्पर विरोधी गुटों में बंट गया। एक गुट का नेता जर्मनी था, तो दूसरे गुट का नेता फ्रांस। इन गुटबन्दियों के एक सैद्धान्तिक समानता और दूसरी हितों की एकता। इटली, जापान और जर्मनी एक सिद्धान्त (फासीस्टवाद) में विश्वास करते थे। वर्साय संधि से उनको समान रूप से शिकायत थी और उसको उल्लंघन करके अपनी शक्ति को बढ़ाने में उनका एक समान हित था। ~~वर्साय व्यवस्था~~ इसके विपरीत फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड इत्यादि देशों का एक हित था। वर्साय-व्यवस्था से उन्हें काफी लाभ पहुँचा था और इसलिए यथास्थिति बनाये रखने में ही ~~उन्हें~~ उनका हित था। बहुत दिनों तक ब्रिटेन इस गुट में शामिल नहीं हुआ, पर अधिक दिनों तक ब्रिटेन गुट से अलग नहीं रह सका। परिस्थिति से बाध्य होकर उसे भी इस गुट में शामिल होना पड़ा। उधर रूस की हालत कुछ दूसरी ही थी। साम्यवादी होने के कारण पूँजीवादी, फासिस्टवादी, दोनों ही प्रकार के गुट उनसे घृणा करते थे। और कोई भी गुट अपने गुट में सम्मिलित करना नहीं चाहता था। पर, जब यूरोप की स्थिति बिगड़ने लगी तब, दोनों ही गुट अपने-2 गुट में मिलाने का प्रयास प्रारंभ कर दिये। ~~परिस्थिति से बाध्य होकर~~ और अन्त में जर्मनी को इस प्रयास में सफलता

मिली और सोवियत संघ उसके गुट में शामिल हो गया। इसके फलस्वरूप यूरोप का वातावरण दूषित होने लगा तथा राष्ट्रों के बीच मनमुटाव पैदा होने लगा। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के गुट को अपने सिने पर तनी हुई कटार की भाँति समझने लगे और उससे बचने के लिए उपाय करने लगे राष्ट्रों के परस्पर संबंध बिगाड़ने में इन गुटबंदियों का कम हाथ नहीं था। इस प्रकार ये गुटबंदियाँ द्वितीय विश्व-युद्ध का बहुत बड़ा कारण थीं।

(4) हथियार बन्दी → जब राष्ट्र के बीच मनमुटाव पैदा होने लगता है, एक देश दूसरे देश से सशंकित होने लगता है, तो वे अपनी सुरक्षा के प्रबन्ध में जुट जाते हैं। इस अवस्था में सुरक्षा का एकमात्र उपाय हथियारबन्दी ही समझा जाता है। जो राष्ट्र जितना अधिक शक्तिशाली होगा, जिसके पास उतना ही अधिक सेना रहेगी। वह अपने को उतना ही ताकतवर समझता है। इस सिद्धान्त में युरोप के करीब सभी राज्य विश्वास करते थे। युद्ध के बाद जर्मनी यद्यपि बिलकुल पस्त पड़ा हुआ था, फिर भी फ्रांस को जर्मनी से काफी भय था। इस लिए वह हथियार बन्दी में हमेशा लगा रहता था। युद्ध के बाद भी वह सैनिक शक्ति में सर्वप्रथम स्थान रखता था। हर वर्ष उसका सैनिक बजट बढ़ता ही जाता था। प्रथम महायुद्ध में फ्रांस की सीमा को जर्मनी बड़ी ही आसानी से पार कर गया था। अतः भावि जर्मन आक्रमण से बचने के लिए फ्रांस ने 1931 में स्वीट्जरलैंड की सीमा से डनकर्क तक किलों की एक श्रृंखला तैयार की जिसको मैगिनो लाईन कहते हैं।

1935 में जब संसार की स्थिति काफी बिगड़ गई तो, ब्रिटेन में भी हथियार बन्दी शुरू हो गयी। फ्रांस के साथी देशों में तो यह पहले से ही जारी था। ब्रिटेन का अनुकरण करते हुए वे देश भी हथियारबन्दी करने लगे, जो अभी तक चुप बैठे थे। इस समय तक जर्मनी में नात्सी क्रांति हो चुकी थी। हिटलर ने वर्साय

संधि की उन शर्तों को जिसके द्वारा जर्मनी पर सैनिक पाबंदियाँ लगा गई थी, मानने से इनकार कर दिया और जोर-शोर से हथियार बन्दी करने लगा। कुछ ही दिनों में जर्मनी की सैन्य शक्ति काफी बढ़ गयी। उसका "वेहरमक्ट" (थल-सेना) और "लुफ्टवाफे" (वायु-सेना) संसार की सबसे शक्तिशाली सैन्य शक्ति थी। फ्रांस के मैगिनो-लाइन के जवाब में उसने भी एक समानान्तर "सीगफ्रीड" लाइन बनाई जो किसी भी हालत में फ्रांस की किले बन्दी से कम नहीं थी। इस प्रकार देखते-2 सारा यूरोप एक शस्त्रागार हो गया। सभी देशों में सैनिक-सेवा अनिवार्य कर दी गयी। राष्ट्रीय बजट का अधिकांश भाग सेना पर खर्च किया जाने लगा। वर्षों तक राष्ट्र-संघ में के तत्वाधान में इस बात का प्रयास होता रहा कि हथियार बन्दी की होड़ रुक जाय। लेकिन राष्ट्रसंघ को सफलता नहीं मिली। और यूरोप में शस्त्रीकरण की होड़ दौड़ होती रही। इस सैनिक तैयारी को देखकर यही निष्कर्ष निकाला जाने लगा कि युद्ध अवश्यम्भावी है और उसके लिए तैयार रहना ही ठीक है।

(5) **राष्ट्रसंघ की शक्ति** → प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्रसंघ की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी कि वह संसार में शांति कायम रखेगा। लेकिन लेकिन जब समय बितने लगा और परीक्षा का अवसर आया तो राष्ट्रसंघ एक बिलकुल शक्तिहीन संस्था साबित हुआ। जब तक छोटे-2 राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों का प्रश्न था, राष्ट्रसंघ को उसमें कुछ सफलता मिली, लेकिन जब बड़े राष्ट्रों का मामला आया तो राष्ट्रसंघ कुछ भी नहीं कर सका। जापान ने चीन पर चढ़ाई कर दी और इटली ने अबिसीनिया पर हमला किया पर राष्ट्रसंघ उनको रोकने में बिल-कुल असमर्थ रहा। अधिनायकों को पता चला कि राष्ट्रसंघ बिलकुल शक्तिहीन संस्था है और वे जो चाहे कर सकते हैं। पर राष्ट्रसंघ की असफलता के लिए उस संस्था को दोष देना ठीक नहीं है, वरन उसके सदस्य दोषी थे। राष्ट्रसंघ तो राज्यों

की एक संस्था थी और उसका कर्तव्य था कि वे उन संस्था को सफल बनावें। राष्ट्रसंघ अबिसीनिया पर आक्रमण के अपराध में इटली इटली को दण्ड दिया उसके विरुद्ध आर्थिक पाबंदियाँ लगाई गईं। लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस ने इसमें राष्ट्रसंघ को सहयोग नहीं दिया किया। यद्यपि राष्ट्रसंघ की विफलता के जो भी कारण थे लेकिन उसपर से लोगों का विश्वास जाता रहा और जिस उद्देश्य से इसकी स्थापना हुई थी उसकी पूर्ति करने में वह सर्वथा असफल रहा।

(6) विश्वव्यापी आर्थिक संकट :→ प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सभी देशों की आर्थिक स्थिति संकट में पड़ गई थी इससे उद्धार का कोई रास्ता भी निकट भविष्य में दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। सभी देशों में राष्ट्रीय भावना फैल रही थी, अन्तर्राष्ट्रीयता का सर्वथा अभाव था। इस हालत में विभिन्न देश आर्थिक क्षेत्र में संरक्षण की नीति का अवलम्बन कर रहे थे। इस कारण सारे संसार में 1929-30 में घोर आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया और हजारों की संख्या में लोग बेकार हो गए। साधारण जनता की हालत एकदम खराब हो गई। अतएव ऐसी हालत में सभी लोग युद्ध की कामना करने लगे, ताकि बेकारी की समस्या का अन्त हो।

(7) जापानी साम्राज्यवाद का उदय :→ बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में विश्वराजनीति के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है जापानी साम्राज्यवाद का उदभव। यूं तो 19 वीं शताब्दी में ही जापान अपना औद्योगिकरण कर के एक आधुनिक राज्य बन गया था इसके बाद साम्राज्यवाद का भूत उस पर भी सवार हुआ। चीन सर्वप्रथम उसकी साम्राज्यवादी शक्ति का शिकार हुआ और प्रथम विश्वयुद्ध तक जापान को अपने प्रयास में काफी सफलता मिल चुकी थी। वर्साय व्यवस्था से भी जापान को अनेक लाभ हुए थे। उसे चीन का शानतुंग और कियाऊ-चाऊ का प्रदेश मिला था। जापान अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। जापान की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए 1921-22 में वाशिंगटन सम्मेलन हुआ।

जिसके द्वारा जापान की सैन्य शक्ति पर अनेक पाबन्दियां लगा दी गई थीं। लेकिन जापान अपनी शक्ति में वृद्धि करता ही रहा और 1931 में चीन पर आक्रमण कर मंचूरिया पर आधिपत्य जमा लिया। जापानी आक्रमण का प्रश्न राष्ट्र संघ में प्रस्तुत किया गया। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

चीन पर जापानी आक्रमण और राष्ट्र संघ की निष्क्रियता एक भयंकर रोग का लक्षण था। जब आक्रमणकारी को कोई सजा नहीं मिली, तो इससे आक्रमण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला और इस तरह एक के बाद दूसरा देश इस प्रकार के आक्रमण का शिकार होने लगा और इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता की स्थिति पैदा हो गई। ऐसी स्थिति में युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

(8) मुसोलिनी और फासिस्टवाद का उदय:- प्रथम विश्वयुद्ध में इटली ने मित्रराष्ट्रों का साथ दिया था जब युद्ध समाप्त हो गया तो उसने अपने को विजेताओं की पंक्ति में खड़ा पाया। ~~शान्ति~~ शांति सम्मेलन में इटली को मित्रराष्ट्रों से अनेक लाभ की आशा थी। उसे न केवल आस्ट्रिया ~~के~~ ~~की~~ के कुछ इलाकों के मिलने की आशा थी बल्कि अफ्रीका में भी क्षेत्र प्राप्त कर साम्राज्य विस्तार करने की बलवती आशा थी लेकिन पेरिस शान्ति सम्मेलन से इटली को खाली हाथ ही लौटना पड़ा। जब उसकी आकांक्षा अपूर्ण रही तो वह असंतुष्ट राज्यों के दल का अगुआ बन गया। देशभक्तों और राष्ट्रवादियों ने इसे राष्ट्रीय अपमान समझा और इसके लिए कमजोर सरकार को जिम्मेवार ठहराया। आर्थिक जनता सन्धि के प्रति राष्ट्र ~~में~~ विद्रोह उत्साह था। आर्थिक संकट ने उसकी दुर्दशा कर दी और देश में चारों तरफ सामाजिक और नैतिक अशांति की ज्वाला भड़क रही थी। सरकार ने अपने उदासीनता की नीति का अवलम्बन किया और अराजकता से उत्पन्न स्थिति को अन्त करने का कोई प्रयास नहीं किया। इस परिस्थिति

से इटली में एक ऐसे पार्टी का जन्म हुआ जिसने इटली के भाग्य में आमूल परिवर्तन ला दिया यह पार्टी फासिस्ट पार्टी थी और इसके सिद्धांत फासिस्टवाद कहलाया। इसके नेता आदि कि फासिस्टों का नेता मुसोलिनी था। वह सत्ता में आया और तानाशाह बन बैठा। जर्मनी तानाशाही के परिणाम यह इटली में दिया ही। सामंवादी साम्यवादियों आदि छोटे-2 देशों में भी देश शुरू कर दिया। परिणाम स्वरूप द्वितीय विश्व युद्ध को बल मिला।

(4) हिटलर और जर्मनी में नाजीवाद → प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से वाइमर गणतंत्र को ~~काफी~~ अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। महायुद्ध एवं भ्रांति योजना से जर्मनी में अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ पैदा हो गई थी। क्षति पूर्ति का भार मात्र जर्मनी पर ही लाद दिया गया था यह एक बहुत बड़ी रकम थी जिसको पूर्ति करना केवल जर्मनी के लिए सम्भव नहीं था। मित्र राष्ट्र जर्मनी की आर्थिक स्थिति के बिना ध्यान दिये ही क्षतिपूर्ति की रकम वसूलते थे। इसके कारण जर्मनी में एक भयंकर आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। बेकारी की समस्या गम्भीर हो गई। जर्मनी की सिक्का "मार्क" का मूल्य एकदम गिर गया। 1930 तक तो जर्मनी की स्थिति ऐसी हो गई थी कि लगता था कि विश्व के मानचित्र से जर्मनी का नाम सदा के लिए मिट जाएगा। जब जर्मनी इस विषम संकट से गुजर रहा था, तो उसी समय हिटलर का जर्मनी में उदय हुआ और जब 1933 में वह चान्सलर बना तो वाइमर गणतंत्र का अंतिम रूप से दाह संस्कार कर दिया।

चान्सलर बनने के बाद हिटलर ने अपने वचन को पूरा करना शुरू किया। सर्वप्रथम उसने अपमान जनक वर्साय की संधि की एक एक शर्त को तोड़ना प्रारंभ किया और जर्मनी के साथ 1919 में जो अन्याय हुआ था, उसका अंत करने लगा। उसने एक ऐसी आक्रामक नीति का अनुसरण किया, जिससे

द्वितीय विश्व युद्ध अनिवार्य हो गई।

(10) डान्जिग का प्रश्न और पोलैण्ड के विरुद्ध अभियान—

21 मई 1939 को जर्मनी ने मेमल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद हिटलर ने डान्जिग बन्दरगाह और पोलिश गलियारे को पुनः प्राप्त करने की पोलैण्ड से माँग की। यह ज्ञातव्य है कि वर्साय-संधि के द्वारा ही पोलैण्ड के राज्य की स्थापना हुई थी। समुद्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिए पोलैण्ड को जर्मनी के बीचों बीच एक गलियारा दिया गया था जिससे पोलैण्ड के निवासी डान्जिग बन्दरगाह तक पहुँच सकते थे। जर्मनी पोलिश गलियारे और डांजिग पर अपना अधिकार समझता था और उसका यह कहना था कि वर्साय-संधि में इस प्रदेश को जर्मनी से छीनकर पोलैण्ड को प्रदान कर मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ अन्याय किया है। अतः इसके लिए हिटलर ने पोलैण्ड से निवेदन भी किया था लेकिन पोलैण्ड उसके निवेदन पर बिना विचार किये ही ठुकरा दिया। फिर भी शांति तरीके से इस विवाद को सुलझाया जा सकता था। लेकिन हिटलर ऐसे तरीकों में विश्वास नहीं करता था। हिटलर ने पोलैण्ड के साथ बल प्रयोग करने की बात को पहले से ही तय कर चुका था। 1939 के पहली सितम्बर को ही जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया और इस तरह से द्वितीय विश्वयुद्ध का बिगुल बज गया।